International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय दर्शन में शून्यवाद

डॉ.डॉली पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

अग्रसेन महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)

सारां– आचार्य नागार्जुन ने शून्यवाद को सर्वप्रथम तार्किक एवं दार्शनिक रूप से प्रतिष्ठित किया शून्यवाद का विस्तृत प्रतिपादन महायान के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ''महायान वैपुल्य सूत्र'' मे है। जिनमे प्रज्ञापार मितायें और सदधर्म पुण्डरीक आदि अत्यंत प्राचीन है।

मूलशब्द 1. परमार्थ 2. संवृत्ति 3. अनिवर्चनीय 4. निर्वाणप्राप्ति 5. लोकसंवृत्ति।

अश्वघोष अपने शास्त्र के प्रारम्भ में कहते है कि ''बुद्ध निर्वाण के पश्चात् भगवान बुद्ध के उपाय कौशल्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के वास्तविक अर्थ को समझने वाले व्यक्ति कम थे। अधिकांश ने बुद्धोपदेष को अन्यथा समझा। अतएव प्रस्तुत शास्त्र का उद्देश्य पृथकजनो एवं हीनयानी श्रावकों तथा प्रत्येक बुद्धों के विपरीत मतो को दूर करके तथागत द्वारा उपधिष्ट सिद्धांतों के वास्तविक अर्थ को प्रकाशित करना है।''1

बौद्ध दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण और केन्द्रीय सम्प्रदाय शून्यवाद या माध्यमिक सम्प्रदाय है। शून्य के दो रूप है यह तत्व भी है और माया भी, यह सत्य भी है और मिथ्या भी यह निर्वाण भी है और संसार भी यह परमार्थ भी है और व्यवहार भी। व्यवहार में शून्य का अर्थ है स्वभाव शून्य और परमार्थ मे शून्य का अर्थ है प्रपंचशून्य। बुद्ध ने अपनी सम्बोधि को मध्यमा प्रतिपद की संज्ञा दी है। अर्थात् सत् और असत् आदि सभी द्वन्दो से ऊपर उठना द्वैतातीत होना। मध्यम का अर्थ समस्त बुद्धि विकल्पों का निषेध है। ''पण्डित पक्ष और विपक्ष दोनों अन्तो को पार कारके मध्य में चिपक कर नही ठहर जाता, वह उसे भी पार कर जाता है''2

नागार्जुन ने कहा है कि जो ''प्रतीत्यसमुत्पाद है वही शून्यता है और वही मध्यमा प्रतिपद है।''3

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अर्विधा–प्रसूत भवचक्र की दृष्टि से यह स्वाभावशून्य धर्मो की प्रतीति है, व्यवहार है सापेक्ष है उपादान या आसक्ति जन्य हे, यही बोधि की दृष्टि से, उपादानरहित निरपेक्ष या वास्तविक सत्ता है, प्रपन्चशून्य एवं शिवपरमार्थ है निर्वाण है।4

नागार्जुन ने अपने 'माध्यमिककारिका' नामक ग्रन्थ के मंगलाचरण में बुद्ध की प्रपन्चोपशम शिवस्वरूप प्रतीत्यसमुत्पाद के उपदेष्टा के रूप में वंदना की है।5 ग्रन्थ के अंत मे समस्त दृष्टियों के प्रहाण हेतु सद्धर्म का उपदेश देने वाले परमकारूणिक बुद्ध को प्रणाम किया।6

नागार्जुन का कथन है कि भगवान बुद्ध ने दो प्रकार से सत्य का निरूपण किया है एक तो लोकसंस्कृति सत्य और दूसरा परमार्थ सत्य। जो इस विभाग को नही जानते वे भगवान बुद्ध के गम्भीर दर्शन का तात्पर्य कदापि नही समझ सकते।7

''संवृत्ति अज्ञान है जो आवरण और विक्षेप दोनो है, यह तत्व के वास्तविक रूप को आवृत्त कर देती हे एवम् उसकी अन्यथा प्रतीति कराती है।8

''संवृत्ति सापेक्ष कारण कार्यभाव है।''9

''संवृत्ति प्रज्ञप्ति है, संकेत है लोक व्यवहार है।''10

बुद्धि को ही संवृत्ति कहा जाता है।''11

बुद्धि विकल्प ही स्वयं अविधा का रूप ले लेता है12

माध्यमिक का संवृत्ति और परमार्थ का विभाग अद्वैत के व्यवहार और परमार्थ के विभाग के समान है। ''चन्द्रकीर्ति ने संवृत्ति को लोकसंवृत्ति और मिथ्यासंवृत्ति मे विभक्त किया है।13

कुमारिल का यह आक्षेप कि '' संवृत्ति यदि सत्य है तो संवृत्ति नही हो सकती और यदि मृषा है तो सत्य नही हो सकती, बलहीन हो जाता है।14

आचार्य नागार्जुन का कथन है कि शून्यता अर्थात सापेक्ष रूप में अविधाजन्य कारणकार्यभाव के रूप में संसार चक्र है जो स्वभावशून्य और मिथ्या है किन्तु व्यवहार में सत्य है, संवृत्ति सत्य है और यही प्रतीत्यसमुत्पाद निरपेक्ष रूप में अप्रतीत्य और अनुपादान के रूप में, निर्वाण है, प्रचन्यशून्य और शिव अद्वैत तत्व है15 ''ये लोग शून्यता पर जो आरोप लगाते है वे सब व्यर्थ और असिद्ध है क्योकि शून्यता मे दोष का कोई प्रसंग ही नही आ सकता।''16

''संसार को सत् या असत् मानने पर ही दोष आते है। हम संसार को सदसदनिर्वचनीय या सापेक्ष मानते है। संवृत्ति और परमार्थ के सांवृत भेद को मानकर ही संसार के समस्त पदार्थो की सापेक्ष तथा व्यावहारिक सत्ता सिद्ध की जा सकती है''17

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भगवान बुद्ध ने शून्यता को सब बुद्धि–विकल्पों का ग्राहो का, कोटियो का अन्तो का, दृष्टियो का निषेध बताया है। ''शून्यता दृष्टिशून्यता है अब यदि कोई इस दृष्टिशून्यता मे भावाभिनिवेष रखकर इसे शून्यता–दृष्टि समझ ले तो उसे बुद्ध ने नष्ट–प्रणष्ट और असाध्य कहा है।''18

''जब संसार की वास्तविक सत्ता नही है तो उसकी प्रतीति ओर निरोध रज्जुसर्पवत है।''19

''निर्वाण ही शून्यता है, यह सब धर्मो की धर्मता है। जो प्रतीति ओर उपादान की दृष्टि से आवागमनरूपी संसार है वही अप्रतीत्य और अनुपादन की दृष्टि से निर्वाण हैं संसार और निर्वाण में रंच मात्र अंतर नही है।20

व्यवहार की सीढी द्वारा ही परमार्थ–प्रसाद पर पहुँचा जा सकता है। व्यवहार–यान द्वारा ही परमार्थ–तट पर लाया जा सकता है। '' जिस प्रकार सलिलार्थी को पात्र की आवश्यकता होती है उसी प्रकार निर्वाण की प्राप्ति के लिए पहले संवृत्ति के सहारे की आवश्यकता होती है उसी प्रकार निर्वाण की प्राप्ति के लिए पहले उपदेश नही किया जा सकता और बिना परमार्थ को जाने निर्वाण प्राप्ति सम्भव नही है।''22

''शून्यता दुखो का शमन करने वाली है। शून्यता ही निर्वाण है, अमृत अभय और शिवतत्व है.।''23

शान्तिदेव द्वारा बोधिचर्यावतार में वर्णित बोधिचित स्वानुभूतिरूप विशुद्ध ज्ञान है। ''यह एक अशुद्ध मरणशील मानव को परम विशुद्ध बुद्ध बना देता है।''24

शान्तिदेव ने इसमे निर्वाण की साधना के विविध सोपानों का अत्यंत सुंदर और विषद निरूपण किया है। ''जीवन्मुक्त बोधिसत्व द्वारा दुखी प्राणियों को मुक्त कराने मे जो अनिर्वचनीय आनन्द आता है उसके आगे व्यक्तिगत मोक्ष का आनन्द फीका पड़ जाता है।''25

भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया है– ''व्यवहार में उन्होनें आत्मा है यह उपदेश दिया फिर उन्होने आत्मा नहीं हे यह उपदेश भी दिया और अपने उत्कृश्ट शिष्यों को उन्होने न आत्मा है ओर न अनात्मा है, यह उपदेश दिया।''26

जिस प्रकार शेरनी अपने शिशु को मुँह से पकड़ कर निरापद स्थान मे ले जाती है, उसकी पकड़ न तो इतनी ढीली होती है कि बच्चा गिर जाय और न इतकी कसी होती है कि बच्चा उसकी दाढो से घायल हो जाये उसी प्रकार भगवान बुद्ध यह सोचकर उपदेश देते है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 06, June 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 8.314 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कि '' उनके शिष्य कुशल कर्मो के सम्पादन से गिरे भी नही और दृष्टि–दृंष्टाओं में फँस कर घायल भी नही हो।''27

भगवान बुद्ध ने सदसदनिर्वचनीय शून्यता का उपदेश दिया है। '' भगवान बुद्ध के गम्भीर उपदेशों का अमृत यह शून्यता है। और यह हमे भगवान बुद्ध के सदधर्म के उत्तराधिकार में मिली है।'' 28

संवृत्ति के मिथ्यातत्व को ज्ञान परमार्थ प्राप्ति से ही सम्भव है जैसे हमारे जागने पर ही स्वप्न का मिथ्यातत्व ज्ञात होता है। ''संवृत्ति बुद्धि व्यापार है। संवृत्ति से ही सारा लोक व्यवहार और सारी आध्यात्मिक साधना चलती है।''29

संसार और निर्वाण, सज्जन और मोक्ष, जगत और तथागत वस्तुतः अभिन्न है। '' जो तत्व अविधा ओर आसक्ति के कारण प्रतीत्यसमुत्पन्न जन्म–मरण चक्र के रूप मे प्रतीत हो रहा है वही प्रज्ञा और अनासक्ति से प्रपन्चोपशम शिव निर्वाण है।30

उपसंहार :– जो सत् है उसका विनाश असम्भव है। उसकी त्रिकालाबाध सत्ता है। जब तक तत्वसाक्षात्कार नही होता तब संवृत्ति–दशा में बुद्धि के क्षेत्र में, समस्त व्यवहार अबाधित रहते है। तत्व साक्षात्कार होने पर निरूपधि निर्विकल्प ज्ञानामृत और अनिवर्चनीय आनन्द है। यही शून्यता दर्शन है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. दि अवेकनिंग ऑफ फेथ इन महायान पृष्ठ 112 रिचर्डकृत अनुवाद पृ. 7 (महायान श्रद्धोंत्पादशास्त्र का आंग्ल अनुवाद)

2. समाधिराजसूत्र पृ. 30

3. माध्यमिक कारिका पृ. 24, 28

4. माध्यमिका कारिका पृ. 25, 9

5. माध्यमिका कारिका पृ. 25, 11

6. माध्यमिका कारिका पृ. 27 ,30

7. माध्यमिका कारिका पृ. 24, 8–9

8. माध्यमिका कारिका पृ. 492

9. माध्यमिका कारिका पृ. 492

10. माध्यमिका कारिका पृ. 492
11. माध्यमिका कारिका पृ. 492
12. बोधिचर्यावतारपन्जिका पृ. 366
13. माध्यमिका कारिका पृ. 6, 25
14. श्लोकवार्तिक पृ. 6, 7
15. माध्यमिका कारिका पृ. 75, 76
16. माध्यमिका कारिका पृ. 24, 13
17. माध्यमिका कारिका पृ. 24, 14
18. माध्यमिका कारिका पृ. 13, 8
19. माध्यमिका कारिका पृ. 220
20. माध्यमिका कारिका पृ. 75, 76
21. माध्यमिका कारिका पृ. 492
22. माध्यमिका कारिका पृ. 492
23. बोधिचर्यावतार 55–56
24. बोधिचर्यावतार 9, 10
25. बेाधिचर्यावतार 8, 108
26. माध्यमिका कारिका पृ. 18, 6
27. माध्यमिका कारिका पृ. 18, 6
28. रत्नावली 61, 62
29. माध्यमिका कारिका पृ. 492
30. माध्यमिका कारिका पृ. 76, 79